तानसेन

चित्र : तानसेन

भारत के मध्य कालीन गायकों में तानसेन का नाम विशेष महत्त्व रखता है। अधिकांश विद्वानों के मतानुसार तानसेन का जन्म 1532 ई० में ग्वालियर से 7 मील दूर बेरहट ग्राम में हुआ था। तानसेन का असली नाम तन्ना मिश्र था और उनके पिता का नाम मकरंद पाण्डेय था। ऐसा कहा जाता है कि तानसेन का जन्म मुहम्मद गौस नामक एक फकीर के आशीर्वाद से हुआ। अपने पिता की एकमात्र संतान होने के कारण उनका पालन-पोषण बड़े प्यार-दुलार से हुआ। फलस्वरूप तन्ना मिश्र बचपन में बहुत उद्दण्ड एवं नटखट थे। प्रारंभ से ही तन्ना में दूसरों की नकल करने की अपूर्व क्षमता थी। पशु-पक्षियों तथा जानवरों की बोलियों की सच्ची नकल करने में तन्ना माहिर थे। हिंसक पशुओं की बोली की नकल करके वे लोगों को डराया करते थे।

एक समय की बात है कि वृंदावन के महान संत संगीतज्ञ स्वामी हरिदास जी अपनी शिष्य मंडली के साथ पास के जंगल से होकर जा रहे थे, तभी उन्हे शेर की दहाड़ सुनाई पड़ी। सभी शिष्यगण भयभीत हो गए परन्तु स्वामी जी तनिक भी विचलित नहीं हुए। थोड़ी ही देर के बाद तानसेन हँसते हुए सामने आए। स्वामी हरिदास जी तन्ना की प्राकृतिक प्रतिभा से अत्यधिक प्रभावित हुए और उनके पिता से तानसेन को संगीत सिखाने के लिए मांग लिया और अपने साथ वृंदावन ले गए।

तन्ना स्वामी हरिदास के साथ रहकर संगीत की शिक्षा प्राप्त करने लगे। उन्होंने लगभग 10 वर्षों तक स्वामी जी से संगीत की शिक्षा प्राप्त की। इसी बीच अपने पिता की अस्वस्थता की सूचना पाकर अपने गाँव चले गए जहाँ कुछ दिनों के बाद इनके पिता का देहांत हो गया। मरने के पूर्व उनके पिता ने तानसेन को बुलाकर कहा कि तुम्हारा जन्म मुहम्मद गौस के आशीर्वाद से हुआ है अतः तुम कभी भी उनकी आज्ञा की अवहेलना नहीं करना। अतः तन्ना ग्वालियर जाकर मुहम्मद गौस के पास जाकर रहने लगे।

ग्वालियर प्रवास के काल में तानसेन ग्वालियर की विधवा महारानी मृगनयनी का गायन सुनने के लिए उसके मंदिर में जाया करते थे। वहीं तानसेन की मुलाकात रानी मृगनयनी की दासी हुसैनी से हुई। हुसैनी की सुन्दरता और उसके गायन ने तानसेन को अपनी ओर आकृष्ट कर लिया। रानी मृगनयनी ने हुसैनी से तानसेन की शादी करा दी। उससे चार पुत्र और एक पुत्री हुई। जिसका नाम क्रमशः सूरतसेन, शरतसेन, तरंगसेन तथा विलास खाँ एवं पुत्री का नाम सरस्वती था।

जब तानसेन की संगीत साधना पूरी हो गई तब रीवाँ नरेश रामचंद्र ने उन्हे अपने यहाँ राज गायक के रूप में नियुक्त कर लिया। चूँकि महाराज रामचंद्र और अकबर बादशाह में मित्रता थी अतः उन्होने तानसेन को उपहार स्वरूप अकबर को भेंट कर दिया। अकबर ने तानसेन को अपने दरबार के नवरत्नों में सर्वश्रेष्ठ राज गायक के पद पर स्थापित कर दिया।

चूँकि अकबर अन्य गायकों की अपेक्षा तानसेन को अधिक प्यार करते थे, अतः दरबार के अन्य गायकों को जलन होने लगी। वे लोग तानसेन को मार डालने की युक्ति निकालने लगे। सभी ने मिलकर बादशाह अकबर से प्रार्थना कि तानसेन से 'दीपक राग' सुना जाए और देखा जाए कि इस राग का कितना प्रभाव है। तानसेन ने बादशाह अकबर को इसके विनाशकारी परिणामों से अवगत कराया, किन्तु बादशाह ने एक न मानी। अतः तानसेन को दीपक राग गाना पड़ा। दीपक राग का गायन करते ही गर्मी बढ़ने लगी। चारों ओर मानो अग्नि की लपटें निकलने लगीं। श्रोतागण भाग निकले। तानसेन का शरीर भी झुलसने लगा। कहा जाता है तानसेन की पुत्री सरस्वती ने मेघ राग गाकर अपने पिता की जीवन रक्षा की। बाद में बादशाह को अपने हठ पर बड़ा पश्चात्ताप हुआ।

कभी-कभी मनुष्य को अपनी विद्या, धन और पद का अहंकार हो जाता है। इसी अहंकार में तानसेन ने ऐलान करा दिया कि इस राज्य में कोई भी गाना नहीं गाए, और जो गाएगा उसे तानसेन के साथ प्रतियोगिता करनी पड़ेगी। जो हारेगा उसे मृत्युदंड स्वीकार करना होगा। इस प्रकार तानसेन के कारण अनेक गायकों की मृत्यु हो गई। अति का अंत भी ईश्वर का विधान है। दैवयोग तानसेन के गुरूभाई बैजू-बावरा ने तानसेन की चुनौती स्वीकार की और गायन प्रतियोगिता में तानसेन को परास्त किया तथा अपने विशाल हृदय का परिचय देते हुए तानसेन को क्षमा कर दिया। उन्होने अन्य गायकों के गायन पर लगे प्रतिबंध को भी हटवा दिया।

कहा जाता है कि मुहम्मद गौस की आज्ञा से तानसेन ने इस्लाम धर्म स्वीकार कर लिया। तानसेन ने दरबारी कान्हड़ा, मियाँ की तोड़ी, मिंया की सारंग, मिंया मल्हार आदि कई रागों की रचना की।

सन् 1585 में तानसेन की मृत्यु दिल्ली में हो गई। तानसेन की इच्छानुसार उन्हें उनके गुरू मुहम्मद गौस की कब्र के बगल में दफनाया गया। जहाँ प्रत्येक वर्ष संगीत समारोह होता है जिसमें देश के उच्च कोटि के कलाकार भाग लेते हैं। ◆◆◆

पं० राजकिशोर मिश्र

पं० राजकिशोर मिश्र

ध्रुपद 'ध्रुवपद' का अपभ्रंश है। जिस गायन के द्वारा हमारे पूर्वज ध्रुवपद, अमरपद या मोक्ष प्राप्त करते थे, उसे ध्रुवपद कहा जाता है। अधिकांश शास्त्रकारों ने इस शैली का जन्मदाता 15वीं सदी में ग्वालियर के राजा मानसिंह तोमर को माना है।

18वीं सदी में बेतिया राज में जो बिहार के चम्पारण जिले में हैं महाराजा आनन्द किशोर और महाराजा नवल किशोर के दरबार में बंगाली मल्लिक और चमारी मल्लिक ध्रुपद के दो सुविख्यात गायक थे। वैसे तो स्वयं दोनों राजा ध्रुपद के अच्छे गायक थे। राजा नवलकिशोर ने स्वयं ध्रुपद की सैकड़ों बंदिशें लिखी थीं। बेतिया घराना के बंगाली मल्लिक और चमारी मल्लिक की वंश परम्परा में ही बाँके मल्लिक, कुंज बिहारी मल्लिक और उमाचरण मल्लिक का नाम आता है। उसी काल में राज दरबार में पं० गोरख मिश्र प्रसिद्ध वीणाकार थे जो ध्रुपदशैली के वीणा वादन में अपना-विशिष्ट स्थान रखते थे।

पं० राजकिशोर मिश्र का जन्म 7 अक्टूबर 1928 को बेतिया के ही किला मुहल्ला में हुआ था जो बेतिया राजदरबार का ही एक हिस्सा था। इनके पिता का नाम पं० गोरखनाथ मिश्र मलिक था। पं० राजकिशोर मिश्र ने ध्रुपद गायन की शिक्षा अपने मामा पं० उमाचरण मल्लिक से ली थी। इसके अतिरिक्त ध्रुपद गायन की विभिन्न वाणियों की गहन अध्ययन उन्होंने अपने रिश्ते के नाना पं० कुंज बिहारी मल्लिक की छत्रछाया में किया। पं० राजकिशोर मिश्र ध्रुपद गायन का चारों वाणियों यथा खंडारबाणी, गौड़हार बाणी, डागुरबाणी और नौहार वाणी के सिद्धहस्त गायक थे। अपने गुरूजनों से प्राप्त ध्रुपद और धमार के ज्ञान को पं० राजकिशोर मिश्र ने अपनी संगीत साधना से और विकसित किय और स्वयं को बिहार के ध्रुपद गायकों के बीच स्थापित किया।

स्वतन्त्रता के बाद जब राजधरानों का विलोप होने लगा तब भी पं० राजकिशोर मिश्र "बेतिया घराना' का झंडा देश के विभिन्न संगीत समाराहों में बुलन्द करते रहे। सन् 1955 से 1965 के बीच अखिल भारतीय संगीत समाराहों में उनके ध्रुपद गायन को विशेष सम्मान मिला। पं० रामचतुर मलिक, विष्णु दिगम्बर पलुस्कर, पं० ओंकार नाथ ठाकुर आदि महान गायकों के साथ उन्होंने कई संगीत समारोहों में भाग लिया। 1988 में बेतिया में ही आयोजित अखिल भारतीय ध्रुपद समारोह में जब पं० राजकिशोर मिश्र ने अपना ध्रुपद गायन

प्रस्तुत किया तो पद्मश्री रामचतुर मलिक ने उनके गायन की भूरि भूरि प्रशंसा की और गले लगा लिया।

वैसे तो पं० राजकिशोर मिश्र मूलतः ध्रुपद गायक थे। गौडहार वाणी और खंडारवाणी के विशेषज्ञ माने जाने वाले पं० राजकिशोर मिश्र जी जब नोम तोम के आलाप के साथ स्वर विस्तार करते थे तो श्रोतागण मुग्ध हो जाया करते थें। ध्रुपद के अतिरिक्त पं० राजकिशोर मिश्र धमार, टप्पा और ठुमरी का गायन भी बड़ी कुशलता से करते थे। ख्याल गायकी के क्रम में स्वर की बारिकियों को बरतना उनकी विशिष्ट कला थी। मिश्र जी सितार और हारमोनियम वादन में भी अपनी विशिष्ट पहचान रखते थे। 1965 में मोतिहारी में आयोजित अखिल भारतीय संगीत समारोह में जब पलुस्कर जी के साथ उन्होंने हारमोनियम पर संगत की तो पलुस्कर जी ने उनकी बड़ी सराहना की।

पं० राजकिशोर मिश्र की संगीत साधना और विशेषकर ध्रुपद शैली को अक्षुण्ण बनाये रखने के लिए संगीत नाटक अकादमी दिल्ली द्वारा पटना में 2006 में आयोजित ध्रुपद समारोह में उन्हें इक्यावन हजार रूपये की सम्मान राशि से पुरस्कृत किया गया। जनवरी 2010 में चेन्नई में आयोजित ध्रुपद समारोह में भी उन्हे सम्मानित किया गया। 2006 में उनकी संगीत साधना एवं ध्रुपद गायन के लिए चम्पारण रत्न की उपाधि दी गई। उनके प्रमुख शिष्यों में उनके पुत्र पं० अरूण कुमार मिश्र, मुहम्मद असलम चिश्ती एवं श्रीमती रुचि मिश्रा प्रमुख हैं जो अखिल भारतीय स्तर पर उनके ध्रुपद गायन की परम्परा को जीवंत बनाये हुए हैं। पं० राजकिशोर मिश्र का आशीष आजीवन सुप्रसिद्ध साहित्यिक-सांस्कृतिक संस्था "साहित्य कुंज" को मिलता रहा।

दिखावे एवं प्रचार से दूर एक संत की तरह संगीत साधना में आजीवन लगे राजकिशोर मिश्र का देहान्त 19 मई 2010 को हो गया। श्री मिश्र भले ही हमारे बीच नहीं हैं किन्तु ध्रुपद गायन की उनकी विशिष्ट शैली सर्वदा स्मरण योग्य है।

◆◆◆

पद्मश्री विन्ध्यवासिनी देवी

पद्मश्री विन्ध्यवासिनी देवी

बिहार में लोक संगीत की परम्परा बहुत समृद्ध रही है। पारम्परिक लोक संगीत के साथ आधुनिक लोक संगीत साधना और उसको समृद्ध बनाने में जिन कलाकारों को विशिष्ट स्थान प्राप्त है, उनमें श्रीमती विन्ध्यवासिनी देवी का नाम भी बड़े आदर के साथ लिया जाता है।

श्रीमती विन्ध्यवासिनी देवी का जन्म बिहार राज्य के मुजफ्फरपुर जिले में 5 मार्च 1920 को हुआ था। बचपन से ही भोजपुरी लोकगीतों के साथ उनका लगाव था। उन्होंने संगीत की शिक्षा क्षितीश चन्द्र वर्मा से प्राप्त की। उनके पति श्री सहदेवेश्वर वर्मा ने संगीत के क्षेत्र में आगे बढ़ने में उनको पूरा सहयोग दिया। भातखंडे संगीत विद्यापीठ, लखनऊ से शास्त्रीय संगीत का पाठ्यक्रम पूर्ण करने के बाद सन् 1945 में वे आर्य कन्या विद्यालय में संगीत शिक्षिका के पद पर नियुक्त हुईं। 1949 में उन्होंने पटना में विन्ध्यकला मंदिर संगीत महाविद्यालय की स्थापना की।

सन् 1955 से 1980 तक श्रीमती विन्ध्यवासिनी देवी आकाशवाणी के पटना केन्द्र में लोक संगीत के प्रोड्यूसर के पद पर रहीं। सात वर्षों तक संगीत नाटक अकादमी नई दिल्ली की वे सम्मानित सदस्या रहीं। वे अनेक वर्षों तक बिहार सरकार के दृश्य तथा श्रव्य परिषद, पूर्वांचल सांस्कृतिक क्षेत्र की सक्रिय सदस्या रहीं।

देश विदेश के सांस्कृतिक आयोजनों में सफल लोकगीत गायन के लिए उन्हें अनेक प्रशस्ति पत्र और ताम्रपत्र मिले। मॉरिशस के प्रधानमंत्री ने विन्ध्यवासिनी देवी को पूरे देश की मौसी कहकर आत्मीय सम्मान दिया।

1974 में भारत सरकार ने इन्हें बिहार के लोकगीतों के संकलन और संवर्धन के लिए "पद्मश्री" से विभूषित किया। बिहार सरकार ने उन्हें बिहार रत्न की उपाधि दी। उन्होंने बारह हजार से अधिक लोकगीतों का संकलन और दो हजार लोकगीतों का गायन किया है। इन्होंने हजारों लोकगीतों की स्वर लिपियाँ तैयार किया। अनेक हिन्दी और भोजपुरी फिल्मों में उन्होंने संगीत भी दिया। बिहारी लोकगीत गायन के सिलसिले में उन्होंने कई विदेश यात्राएँ की।

उन्होंने भोजपुरी और मैथिली लोकगीतो की मंडली को लेकर अनेक बार देश के विभिन्न सांस्कृतिक केन्द्रों में अपनी सफल प्रस्तुतियाँ दी हैं। बिहार की आंचलिक फिल्मों

में चित्रगुप्त के संगीत निर्देशन में गीत और संगीत दिया। प्रथम मैथिली फिल्म कन्यादान में स्वतन्त्र रूप से संगीत निर्देशन भी किया। 1991 में इन्हें संगीत नाटक अंकादमी सम्मान दिया गया।

बिहार की पृष्ठभूमि पर बनी 'छठ मैया की महिमा' में प्रसिद्ध संगीत निर्देशक भूपेन हजारिका के निर्देशन में पार्श्व गायन किया। डागदर बाबू फिल्म के दो गीत भी गाये।

मध्यप्रदेश शासन ने इन्हे "राष्ट्रीय देवी अहिल्या पुरस्कार" से सम्मानित किया। 2005 में इन्हें संगीत नाटक अकादमी रत्न पुरस्कार से सम्मानित किया गया। लोक संगीत की इस महान साधिका का देहान्त 18 अप्रील 2006 में हो गया। आज वे भले हमारे बीच नहीं हैं किन्तु लोक संगीत के प्रति उनका समर्पण सर्वदा याद किया जायेगा।

1. प्रश्न : तानसेन एवं पं० राजकिशोर मिश्र जी की संक्षिप्त जीवनी लिखें।
2. प्रश्न : ध्रुपद क्या है ? बेतिया घराना के प्रमुख ध्रुपद गायकों के नाम लिखें।
3. प्रश्न : श्रीमती विंध्यवासिनी देवी की जीवनी लिखें।
4. प्रश्न : श्रीमती विंध्यवासिनी देवी का लोकसंगीत को समृद्ध करने में क्या योगदान है ?

◆◆◆